ज्योत्स्ना मिलन के उपन्यास विधा में चित्रित नारी की समस्याएँ

कुमारी शकुंतला दशरथ कुंभार
शोध छात्रा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
ई मेल– shakuntalakumbhar10@gmail.com
संपर्क : 7745885113/9822911235

शोध सारः आज तक हिंदी साहित्य जगत में अनेक समस्याओं पर विचार मंथन हुआ है । मनुष्य से जुड़ी हर समस्या को हिंदी साहित्य का विषय बनाया गया है । उसमें अगर नारी जीवन पर विचार किया जाए तो नारी जीवन पर अनेक समस्याओं का चित्रण हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं के माध्यम से हुआ है । लेकिन ज्योत्स्ना मिलन के साहित्य की नारी आम नारी है, जिसने अपने जीवन में अनेक समस्याओं का सामना किया है । आम नारी से जुड़ी हर एक समस्या को बारीकी से चित्रित करने का काम ज्योत्स्ना मिलन ने किया है, जो अन्य लेखकों से उनको अलग बना देता है और यही समस्याएँ आज नारी जीवन की प्रासंगिकता को भी दर्शाती है तथा आम नारी जीवन के यथार्थता को स्पष्ट करती है । विवेच्य साहित्य में विधवा की समस्या, सामाजिक समस्या, अनमेल विवाह, अंधविश्वास, भावनात्मक समस्या आदि समस्याओं का चित्रण किया है ।

प्रस्तावनाः

मनुष्य जीवन संघर्षों से भरा हुआ है । जीवन के हर मार्ग पर जीवन जीते समय उसे संघर्ष करना पड़ता है । और बिना संघर्ष के मनुष्य जीवन की कोई सार्थकता नहीं होती । मनुष्य वर्ग में अगर नारी जीवन पर विचार किया जाए तो अन्य जीवों से ज्यादा संघर्ष तथा मुश्किलें नारी जीवन में आती है । जन्म से लेकर मृत्यु तक का उसका सफर संघर्ष से तथा समस्याओं से भरा हुआ है । हर पड़ाव पर जीवन उसके लिए एक चुनौती बन जाता है । जीवन का हर पथ उसके लिए समस्याओं से भरा होता है । ज्योत्स्ना मिलन का साहित्य भी अधिक मात्रा में नारी केंद्रित है । नारी से जुड़ी अनेक समस्याओं का चित्रण उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से किया है ।

ज्योत्स्ना मिलन द्वारा लिखित 'अपने साथ' इस उपन्यास की प्रमुख पात्र केका की पड़ोसन अम्मा की बहू, बिल्वा और उसके बीच के संबंध को लेकर सास–बहू की समस्या के माध्यम से सामाजिक समस्या को दर्शाया है । जब केका अम्मा से बात कर रही थी तो, बिल्वा को लगा कि केका का इस तरह का लगाव मेरे साथ भी होना चाहिए । इसीलिए वह केका को पराठे बना कर देने के लिए कहती है । मगर केका बात को टाल देती है । ऊपर से अम्मा कहने लगती है, "आज की बहू में बेटों के समान, उसकी माँ को माँ तो कहती है, मगर सास के साथ माँ जैसा व्यवहार बिलकुल नहीं करती ।"[1] इस बात को चिढ़ती हुई केका इसका जवाब देती है, बहू बेटी की तरह पेश आनी चाहिए तो सास को भी माँ की तरह बर्ताव करना होगा । यहाँ सास–बहू के बिगड़ते संबंधों की समस्या को चित्रित किया गया है । जो आज भी भारतीय समाज के भारतीय परिवारों की सबसे बड़ी वास्तविक समस्या है ।

'केशर माँ' इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने पारिवारिक समस्या को चित्रित किया है । जहाँ बड़े परिवार तथा निर्धन परिवार की समस्या आती है । परिवार बड़ा और निर्धन होने के कारण इस उपन्यास का प्रमुख पात्र केशर को ऐसे व्यक्ति से

शादी करनी पड़ती है, जिसकी उम्र पैंतीस साल है, जो अधेड़ उम्र का है और उसके माँ–बाप को इस बात का पता है कि केशर की शादी हो जाने के बाद कुछ दिनों के बाद ही उसके पति का देहांत हो जाएगा । इतनी बड़ी सच्चाई पता होने के बावजूद भी केशर का विवाह उस व्यक्ति से किया जाता है जो केशर से कई गुना उम्र में बड़ा है । लेखिका ने केशर की स्थिति से भारतीय परिवारों की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया है ।

'अपने साथ' इस उपन्यास के माध्यम से ज्योत्स्ना जी ने सामाजिक समस्या को चित्रित किया है । इस समाज में जब एकाध औरत अकेली दिखती है तो आने–जाने वाले लोग उसके साथ किस तरह पेश आते हैं । उसके साथ किस तरह का व्यवहार करते है यह चित्रित किया है । एकाध औरत अगर रास्ते में अकेली नजर आई तो उसे कई तरह के सवाल पूछे जाते हैं । उसे परेशान किया जाता है । इस उपन्यास की प्रमुख नारी केका के साथ भी ऐसा ही होता है । एक दिन केका जब रात को अपने बेटे के साथ वापस घर लौट रही थी, तब बीच में उनके पड़ोसी सिन्ना साहब मिल जाते हैं, जो उसे पूछ लेते हैं । "आप अकेली कैसी ?"[2] उनके इस सवाल के पीछे मानो कई सारे सवाल खड़े थे । उस सवाल के पीछे यह भी सवाल था आपका पति कहाँ है? कब आएगा? कहाँ गया है? ऐसी बहुत बड़े सवालों से भरी श्रृंखला हो सकती थी और इन सवालों के सही–सही जवाब केका देना नहीं चाहती थी । अगर सच बताया जाए तो भी कई सारे सवाल उठ सकते थे और झूठ बोला जाए तो भी इस परिस्थिति से बचा नहीं जा सकता था । लेकिन इस तरह की बेहूदा स्थिति से बचने के लिए वह झूठ ही बोल देती है । यही स्थिति कई बार हमारी भारतीय स्त्रियों की होती रही हैं और इसे एक वास्तविक समस्या के रूप में लेखिका ने चित्रित किया है । जिसे भारत की हर नारी को किसी ना किसी रूप में इस समस्या का सामना जरूर करना पड़ता है ।

'अपने साथ' इस उपन्यास में एक सोलह साल की लड़की का विवाह बिरजू से हुआ था । बिरजू एक बनिया था । घर वाले भी काफी सख्त थे । बिरजू की पत्नी गर्भवती थी, तब उसके मायके वाले कई बार उसे बुलाने के लिए आए, मगर उसकी सास ने उसे भेजने से इनकार कर दिया । सास को लगता था, अगर बहू चली जाएगी तो घर का सारा काम कौन करेगा? उस बेचारी की शादी को केवल एक ही साल हुआ था । परसों अचानक उसकी मौत हो जाती है । काम का बोझ उठाते–उठाते वह मर गई और उसके पेट में जो बच्चा था वह भी मर गया । यहाँ अनमेल विवाह की समस्या को चित्रित करते हुए ज्योत्स्ना जी ने समाज में आज भी चली आ रही अनिष्ट प्रथाओं को तथा समाज में बहू यानी स्त्री के प्रति व्यवहार को वास्तविक रूप में चित्रित किया है ।

'केशर माँ' इस उपन्यास के माध्यम से 'अनमेल विवाह' की समस्या को चित्रित किया है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र केशर का विवाह ऐसे व्यक्ति से होता है जिसकी उम्र अधेड़ है और सबसे बड़ा सच था यह था कि शादी के कुछ दिनों बाद उसके पति की मृत्यु होने वाली थी । यह सब कुछ जानते हुए भी केशर को विवाह करना होगा इस चिंता से माता–पिता ने गलत इंसान से उसकी शादी करवा दी । इसका पूरा परिणाम उसे जिंदगी भर भुगतना पड़ा । जो दिन उसके रंगीन थे, शादी के कुछ महीनों के बाद पूरी तरह बेरंग बन गए । सिवाय सफेद रंग और काले रंग के इसके जीवन में कुछ रहा नहीं और इसके लिए उसने एकमात्र पर्याय चुना वह था ईश्वर पूजा । वह मन से कुछ करना नहीं चाहती थी लेकिन उसके पास करने के लिए भी ऐसा कुछ नहीं था । सिर्फ जीने का केवल एक मात्र सहारा था पूजा । यहाँ केशर माँ की जिंदगी बरबाद हो जाने का एकमात्र कारण था अनमेल विवाह ।

'अपने साथ' इस उपन्यास के माध्यम से ज्योत्स्ना जी ने समाज में चित्रित अंधविश्वास को चित्रित किया है । जब इस उपन्यास की प्रमुख पात्र केका को रेणु का पत्र आता है, तब वह पत्र में लिखती है कि मुझे अभी बच्चा नहीं चाहिए । अभी मैं थिसिस लिखने में व्यस्त हूँ । आजकल बच्चा होना या दो बच्चे होना उस परिवार पर निर्भर होता है । केका तो चाहती है कि उसका दूसरा बच्चा हो, लेकिन उसके मन में ख्याल आता है कि जिनके बच्चे नहीं होते, या जब बच्चे नहीं होते तो बच्चों को पाने के लिए पाँच उँगलियों से महादेव जी की पूजा करते हैं । मंदिर में होने वाले पेड़ पर मन्नत माँगते हैं और उसे बहुत सारे धागे तथा चिथड़े बाँधते

हैं । कभी–कभी ब्राह्मणों को भोजन तथा दान भी कराते हैं । उनको लगता है कि ऐसा ही करना चाहिए । ऐसे इस तरह के काम करने से उनकी पत्नी को बच्चे हो जाएँगे । इन सब उदाहरण के माध्यम से ज्योत्स्ना ने समाज में चित्रित अंधविश्वास को उजागर किया है, जो आज भी कई शिक्षित–अशिक्षित लोगों में पाया जाता है और जिसका शिकार केवल औरत बनती है ।

'अपने साथ' उपन्यास के माध्यम से ज्योत्स्ना जी ने विधवा समस्या को चित्रित किया है । केका आज जिस मोहल्ले में रहती है, गंगा चाची भी वहीं रहती थी । उसकी उम्र पचास के आसपास थी । पिछले साल ही बेटे की शादी हो गई और नई नवेली दुल्हन घर आ गई । लेकिन पिछले दो सालों से उसके बर्ताव में काफी बदलाव आया है । जब देखो तब गंगा चाची आईने के सामने दिखती है । आईने के सामने खड़ी होकर सजती–सँवरती है । मोहल्ले के बूढ़े जब उसके पीछे घूमते हैं, तो अखरने लगती है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बावजूद भी वह बेचारी बन जाती है । ऐसा लगता है कि इसके लिपा–पोती के पीछे कितना सारा दर्द है । कितनी सारी छटपटाहट छिपी हुई है । जो जिंदगी उसने जी नहीं थी वही जिंदगी जीने का मन करने लगता है । एक विधवा की जिंदगी कितनी उलझन भरी होती है उसका चित्रण किया गया है ।

'अ अस्तु का' इस उपन्यास के माध्यम से भावनात्मक समस्या को चित्रित किया है । इस उपन्यास की प्रमुख पात्र अस्तु जिसे हमेशा होने और ना होने की समस्या भावनात्मक रूप से सताती है । कभी उसे इस बात का डर लगता है कि अगर कहीं पेड दिखना बंद हो जाए तो, अगर एक दिन कभी आसमान ही ना दिखाई तो, और कभी–कभी उसे लगता है जैसे मानो वह पूरी तरह से साँस नहीं ले पा रही है । उसे लगता है उसे पूरी साँस आती ही नहीं। और इसी दुविधा में उसका मन हमेशा अटका रहता है । और कभी–कभी पड़ोस के बच्चे के अचानक मर जाने का सदमा भी उसे साँस लेने में तकलीफ करता है । यह सब बातें अस्तु की भावनात्मक छटपटाहट को दिखाती है । यहाँ पर आम नारी के माध्यम से हर सामान्य नारी में चलने वाली भावनिक दुविधा को चित्रित किया है ।

निष्कर्षः

ज्योत्स्ना मिलन का साहित्य नारी केंद्रित है । नारी जीवन से जुड़ी सामान्य से सामान्य समस्या को उन्होंने अपने लेखन का विषय बनाया है । नारी संदर्भ में विवाह की समस्या, सामाजिक समस्या, अनमेल विवाह, अंधविश्वास, भावनात्मक समस्या आदि समस्याओं को चित्रित किया है । इन समस्याओं का नारी जीवन पर पडने वाला प्रभाव दिखाया है । य़ही समस्याएँ आज भी सामान्य नारी के जीवन में पाई जाती है । जिसका य़थार्थ चित्रण लेखिका ने किय़ा है ।

संदर्भ ग्रंथः

ज्य़ोत्स्ना मिलनः अपने साथ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1976 पृ.सं.23
वही,पृ.सं.28
वही,पृ.सं.42
वही,पृ.सं.76
ज्य़ोत्स्ना मिलनः केशर माँ, हार्पर कॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया, नई दिल्ली, 2011, पृ.सं.158
वही,पृ.सं.163
ज्य़ोत्स्ना मिलनः अ अस्तु का, हार्पर कॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया, नई दिल्ली, 2009, पृ.सं,9
ज्य़ोत्स्ना मिलनः संस्मरण, स्मृति होते–होते, सूर्य़ प्रकाशन मंदिर बिकानेर, सं 2010
ज्य़ोत्स्ना मिलनः कहते कहते बात को, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013